Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना का एक अध्ययन

कुमारी भावना पाण्डेय (शोध छात्रा)
डा0 धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)
विषय हिन्दी कला विभाग, फैक्लटी ऑफ मानविकी मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़

सारांश, मानव का सबसे बडा आकर्शण के केन्द्रमानव ही है और यही कारण है कि उकी सभी अभिव्यक्तियाँ औरकार्य मानव से संबधित है। समूचा साहित्य मानवीय भावों,अनुभवों, और संचार भावों अर्थात, भावों, मनोभावों और मनोविकारों से प्रभावित होता है। साहित्य के अध्ययन के साथ – साथ सहित्यकार का व्यक्तित्व भी उभरकर हमारे सामने आ जाता है। सहित्यकार अपनी कृति में स प्रकार व्याप्त रहता है। जैसे भारीर में आत्मा और नभमण्डल में तारा। यही कारण है। कि उसके व्यक्तित्व के रूप– प्रति रूप साहित्यकार द्वारा रचित सहित्य में यत्र – तत्र बिखरे रहते है। इस संदर्भ में राजेन्द्र यादव जी का विचार है। ''कलाकार का व्यक्तित्व, उसका परिचय, उसका वि वास और उसकी प्रतिबद्वता सभी कुछ उसकी कला होता।'' ''किसी के व्यक्तित्व की पहचान के लिये उस व्यक्ति की पहचान आव यक है, ऐसा कहा जाता है कि जब हम किसी व्यक्ति के संपर्क में पहली बार आते है तब उसके स्थूल रूप और बाहरी व्यक्तित्व से परिचित होते है। और जब हम उस व्यक्ति के संर्म्क में बार – बार आते है तब हम उसके गुण एवं दोश से प्रभावित होते हैं जो उसका अंतरंग व्यक्तित्व होता है।' सहित्य का केन्द्र बिन्दु सहित्यकार का व्यक्तित्व ही है। साहित्य की सृश्टि में ही व्यक्तित्व की चरम परिणति है। व्यक्तित्व गुणों एव प्रवृत्तियों की संगठित एकता है। सामाजिक परिवे ा मे प्रत्येक व्यक्ति की किया – प्रतिकिया करने की अपनी भौली होती है। उसके अपने आद र्ा होते है। इसलिए विचाारकों ने

मुख्य शब्द, व्यक्तित्व, प्रतिबद्वता, मनोभाव, प्रतिकिया आदि।

प्रस्तावना, व्यक्ति की समस्त भाक्तियों एवं प्रवृत्तियों की पारस्परिक धनिश्ठ किया प्रतिकियाओं की समन्वित इकाई को व्यक्तित्व माना है।'' उपरोक्त सभी वि ोशता चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व में दिखाई देती है। चित्रा मुद्गल जी का विवाहोपरान्त ग्रहण किया किया गया पति का उपमान है। इससे पूर्व चित्रा मुद्गल जी चित्रा ठाकुर के नाम से जानी जाती थीं। ठाकुर प्रताप सिंह भारतीय जल सेना में उच्चाधिकारी पद पर रहे। वे उत्तर प्रदे ा के उन्नाव जिले के बैसवाडा क्षेत्र के गांव निहालीखेडा के जमींदार ठाकुर बजरंग

सिंह के सपुत्र थे । अपनी माता पिता की चार संतानों में चित्रा जी उनकी दूसरी संतान है। चित्रा जी के बडे भाई कमले ा बहादुर सिंह है और सबसे छोटे भाई कृश्ण प्रताप सिंह है। चित्रा जी की छोटी बहन के ाा ठाकुर एक ि ाक्षिका है, जिनका विवाह ग्वालियर निवासी डॉ राजेन्द्र कुमार सिंह जी से हुआ है। चित्रा जी की माता का नाम श्रीमती विमला ठाकुर था। वे भी प्रतापगढ जिले के अमी ांकर गांव के जमीदार गयाबक ा सिंह की मंझली बेटी थी। विमला जी के पिता की जमींदारी ब्यालीस गांव तक फैली हुई थी। इस प्रकार साहित्यिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ चित्रा मुद्गल जी को विरासत के रूप में प्राप्त हुई है।

चित्रा मुद्गल जी को किसी एकजह से स्थाई रूपसे ि ाक्षा नहीं मिल पायी। पिता के स्थाानान्तरण के साथ इनके स्कूल बदलते रहे। प्रारंभिक ि ाक्षा विले पारले मुम्बई में तो दूसरी कक्षा से लेकर चौथी कक्षा की पढाई इनके पैतृक गाँव निहालीखेडा से लगे गाँव भरतीपुर की कन्या पाठ ााला मे हुई, पुन: पाँचवी कक्षा की पडाई मुम्बई क सेन्ट्रल स्कूल से पास की घाटकोपर स्थित हिन्दी हाईस्कूल से मैट्रिक पास किया। मुम्बई के पूना बोर्ड से हायर सेकेण्डरी तथा मुम्बई वि वविद्यालय से संबंधित सेमैया कॉलेज से स्नातक बी. ए.की ि ाक्षा ली। स्नातकोत्तर की पडाई पत्राचार के माध्यम से एस.एन.डी.टी.महिला महाविद्यालय मुम्बई से की । चित्रकला में गहरी अभिरूचि होने के कारण जे.जे. स्कूल ऑफ आट्र्स से फाइन आर्ट्स का भी अध्ययन किया। बचपन से नृत्य में रूचि होने के कारण गुरू सुधा डेरा स्वामी से भरत नाट्यम की ि ाक्षा ग्रहण की।

इनकी अम्मा ने बताया है, कि बचपन में तुम बहुत जिज्ञासु बच्ची थी स्थिर एक जगह न टिककर बैठने वाली। तुमसे मिलना, तुमसे प्यार करना सभी को अच्छा लगता, मगर तुम चुप नहीं बैठ सकती थी । यह क्या है, क्यूं है, कैसे है ? सवाल पर सवाल इतने कि तुम्हें बच्चा समझकर लडियाने वाला हैरान हो खीझ उठता कि हर चीज का जानने समझने की जिद्रद होती थी तुम्हारी। किसी का अमानवीय व्यवहार उन्होने कभी स्वीकार नहीं किया। चित्रा जी बचपन से ही निर्भीक विचार और स्वतंत्र चिंतन से पूर्ण रही है। अपने बारे में उनका विचार है, दृढ परम्परा के आतंक से मुक्त होकर मैंने तय कर लिया था, कि मैं वही करूँगी जो मैं करना चाहती हूँ, न सोच गिरवी रख सकती हूँ, न मस्तिश्क, न भावनाएँ, न विचार, न दृश्टि इसलिए कि मैं लडकी हूँ ।

साहित्य, संगीत और कला की त्रिवेणी इनके हृदय में सदैव प्रवाहित रही है। यही कारण है कि साहित्य के साथ – साथ चित्रकला और नृत्यकला से भी चित्राजी का आत्मीय संबंध रहा है। नृत्यकला में इनकी रूचि को देखकर दादी न विरोध किया, क्योकि वे नृत्य को ठाकुर परिवार की परम्परा के विरूद्व

मानती थी। पिता की सामंतवादी मानसिकता एवं कार्यो ने चित्राजी के बाल मन को बहुत प्रभावित किया। उनकी माँ सीधी– साधी, पढी – लिखी धरेलू महिला थी। उनके माता –पिता के बीच मेल नहीं था। चित्राजी के अनुसार माँ के साथ पिताजी का व्यवहार असंतोशजनक और बुरा था। इसके कारण चित्राजी के मन में माँ के प्रति लगाव बढा, वहीं दूसरी ओर पता ज के प्रति विद्रोह की भवना जन्मी। स्वयम चित्राजी के भाब्द विद्रोह, संधर्श और कायरता मनुश्य को ये चीजें धर के वातावरण से ही मिलती है, मुझे भी धर के माहौल ने विद्राही बनाया। मैंने जमींदारी के माहौल में आँखे खोली थी, जहाँ पुरूश यानी पिता सत्ता थी। घर के सारे लोग तिाजी के इ ाारे पर चलते थे, यानी पिता के आद ार्, पिता की पसंद और पिता की नापसंद। अपनी पसंद से हम कुछ कर ही नहीं पाते थे। विरोध करने की किसी की हिम्मत नहीं थी। मैंने देखा मेरी माँ पर हर चीज थेपी जाती थी। पिता को खाना पसंद नहीं आता था तो थाल खिडकी के बहार फेंक देते थे। फिर भाई– बहनों में भेदभाव किया गया। भाई अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजे गये अैर बहनों को मामूली स्कूल में प्रवे ा मिला। इससे प्रमाणित होता है, कि चित्रा मुद्गल जी का बचपन कैसे माहौल में बीता ।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

भोधार्थिनी ने इस भोध पत्र पर कार्य करने के साथ ही इन भोध पुस्तको का गहन अध्ययन इस प्रकार किया है।

यादव, जितेन्द्र (2023) चित्रा मुदगल का कथा संग्रह, के चित्रा जी के लेखन में एक तरफ आज के जीवन में क्षीण होती जा रही मानवीय संवेदनाओं का चित्रण है तो दूसरी तरफ नए जमाने की रफ्तार में फंसी जिंदगी की मजबूरियों का चित्रण भी सलीके से हुआ है। समाज के निम्न वर्ग से अपने पात्रों का चुनाव करती हैं और उन्हीं किरदारों के माधयम से सामाजिक समस्याओं की तरफ इशारा करती हैं। अब तक लगभग तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, चार बाल कथा संग्रह, पांच संपादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बहुचर्चित उपन्यास 'आवां' के लिए उन्हें 2003 व्यास सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उन्हें इंदु शर्मा कथा सम्मान, साहित्य भूषण, वीर सिंह देव सम्मान मिल चुका है। उन्हें सन 2018 का हिन्दी भाषा का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया है।

आशु मंडोरा (2023) चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में उपस्थित विविध परिदृश्य, चित्रा मुद्गल समकालीन साहित्य की एक सुप्रसिद्ध एवं सफल लेखिका है। वह अपने लेखन कार्य में अभी भी कार्यरत है एवं

समय–समय पर समाज में उपस्थित किसी नये एवं ज्वलंत विषय के रूप में अपनी रचना पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। उनका कथा साहित्य समाज के दर्पण के समान जान पड़ता है जिसमें समाज में उपस्थित छोटे से छोटा समझा जाने वाला बिंदु साहित्य का कथा का रूप लेकर प्रकट होता है। उनके प्रत्येक उपन्यास का विषय एक दूसरे से सर्वदा भिन्न एवं विशिष्ठ हैं। उसी प्रकार उनकी कहानियों में भी विविध परिदृश्य देखने को मिलते हैं। चित्रा जी अपनी एक कहानी के माध्यम से केवल एक नहीं दो या दो से अधिक बिन्दुओं पर प्रकाश डालती चलती हैं।

सहायक वी.के (2022) चित्रा मुद्गल की कहानी 'अभी भी' में स्त्री विमर्श चित्र मुदुगल आधुनिक हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्धकार आदि है। उनका जन्म 10 दिसंबर 1944 में चेन्नई में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुई। 1962 में हायर सेंकडरी पूना बोर्ड से हुई। शेष पढ़ाई मुंबई में हुई थी। अब तक चित्रा मुद्गल के तेरह कहानी संकलन प्रकाशित हो चुके है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध को पूरा करने के लिये मेरे द्वारा निम्न शोध उद्देश्य तैयार किये गयें है, जो इस प्रकार है।

1. चित्रा मुद्गल की कहानियों में समाज के निम्न वर्ग की यथार्थ स्थिति को ज्ञात करना
2. चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय मूल्यों व सवेंदना को ज्ञात करना

शोध प्र न

इस भाोध को पूरा करने के लिए जो प्र न मेरे सामने आयेगें में उनका उत्तर अपने इस भाोध की आव यकता अनुसार उत्तर खोजने का प्रयास मेरे द्वारा किया जायेगा।

1. चित्रा मुद्गल की कहानियों में समाजिक वर्ण व्यवस्था क्या है ?
2. चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय मूल्य क्या क्या रहेंगे ?

शोध विधि

अधिकतर साहित्यकारों के आधार पर हिन्दी साहित्य में आंकड़े उलझे ही होते हैं जैसे चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना : एक अनु ाीलन साहित्यक अध्ययन के समकालीन समय को शोधार्थिनी ने देखा तो नहीं है इसीलिये वह पूरी तरह से उसी साहित्य और कविताओं पर ही मुझें निर्भर रहना है। जो चित्रा मुद्गल की कहानियों में मानवीय संवेदना समकालीन समय में साहित्यकारों ने जो लिखा है।

इस साहित्य में चित्रा मुद्गल की कहानियों की सच्चाई भी हो सकती जो ऐसे कई हिन्दी साहित्य पुरातात्विक और अब तक अज्ञात अनेक कवियों की कविताऐं भी मिल सकती हैं जिनके गहन अध्ययन और विचार विमर्श के बाद जो सत्यता प्रकट होगी उसी को मैं इस शोध में यथास्थान वर्णित करूंगी। **इसीलिए इस शोध मे शोधार्थिनी द्वारा वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।** क्योंकि यह शोध पूरी तरह से चित्रा मुदगल जी की कहानियों पर ही आधारित होगा इस शोध को और अधिक विश्वसनीय बनाने में अपने मंगलायतन वि ववद्यालय बेंसवां, अलीगढ़ साहित्यिक सामग्री से भी में इस शोध के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को एकत्रित करने में बहुत ही मदद मिल सकती है। ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

भोध पत्र का महत्व, चित्रा मुद्गल जी को लेखन का गुण पिता ठाकुर प्रतापसिंह से विरासत में मिला था। वे अंग्रेजी में रोमाटिक कविताएँ और नाटक लिखा करते थे। चित्रा मुद्गल जी ने कि ोरावस्था में ही लिखना आरंभ कर दिया था, उनके स्कूल की वार्शिक पत्रिका में एक कविता **मंजिल है मेरी दूर अभी व** एक छोटी कहानी **डोमिन काकी** छपी थी। नवभारत टाइम्स 25 अक्टूबर 1964 के रविवारीय में चित्रा मुद्गल जी की प्रथम कहानी **सफेद सेनारा** प्रकाि ात व पुरस्कृत हुई जिसने उन्हें एक लेखिका के रूप में प्रमाणित किया । इस कहानी को पढकर उनके पिताजी ने माँ से कहा था, कि इस बेवकूफ से कहो कि ऐसी कहानी न लिखे, लिखने की जरूरत ही क्या है। धर के इसी माहौल ने चित्रा मुद्गल जी को विद्रोही बनाया और रचना संसार का रास्ता दिखाया पुरस्कार में उन्हें 25/ रूपये चित्रा मुद्गल जी को मनीआर्डर आया था। लेखन के माध्यम से यह चित्रा मुद्गल जी की पहली आय थी। जब पहला मनीआर्डर लेकर पौस्टमेन बंगले पर आया तो ठाकुर साहब के कान खडे हो गये, पूरी तरह छानवीन की गयी और जब उन्हें इत्मीनान हो गया कि नवभारत टाइम्स से प्रतियोगिता का पुरस्कार आया है, तभी वह उन्हें लेने दिया गया। चित्रा मुद्गल जी इस धन रा ि ा को पाकर पक्षी की तरह उडाने भरने लगी और उन्होने धर से पॉकेट मनी लेना बंद कर दिया, जिस पर ठाकुर साहब बहुत नाराज हुए। वे जानती थी कि अगर वे पिताजी से एक रूप्ये मांगेगी तो दस मिलेंगे लेकिन वे ऐसे व्यक्ति से पैसे कैसे ले सकती है, जो नारी के प्रति ताना ाही रवैया रखे तथा उसकी प्रगति व स्वतंत्रंता के विरूद्व हो ? इन सबके परिणामस्वरूप पिता ने चित्रा मुद्गल को एक दिन पारिवारिक मर्यादाओं का स्मरण करते हुए सुनाया कि "निहालसिंह के खानदान जिनके नाम पर उन्नाव स्थित उनके गाँव का नाम निहालीखेडा में किसी लडकी को ऐसी छूट नहीं है। चित्रा मुद्गल जी ने प्रतिवाद में उत्तर दिया, कि निहालसिंह के खानदान में किसी लडकी ने कभी किसी बडे स्कूल तो क्या मामूली मदरसे का मुंह भी नही देखा होगा। कभी पिता के साथ ि ाकार

पर नहीं गयी होगी। कभी आधुनिक पो ाकें नहीं पहनी होंगी। धुडसवारी नहीं की होगी, फिर वह अखबारों में क्यों नहीं लिख सकती"?

चित्रा मुद्गल ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने पैतृक गांव के पास भरतीपुर के कन्या पाठशाला से प्राप्त की थी, इसके बाद उन्होंने महाराष्ट्र के विले पार्ले में इंग्लिश मीडियम से की थी। इसके बाद उन्होंने सौम्या कॉलेज, घाटकोपर से अपने कॉलेज जीवन की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने 'सर जे जे स्कूल ऑफ आर्ट्स' से फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा और फिर उन्होंने 'एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय' से ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की। चित्रा मुद्गल के उपन्यास और लोकप्रिय रचनाओं के कारण उन्हें साहित्य भूषण सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार और इंदु शर्मा कथा सम्मान से सम्मानित किया गया। एक जमीन अपनी' चित्रा मुद्गल के उन लोकप्रिय उपन्यासों में से एक हैं, जिसमें आधुनिक भारत की मध्यवर्गीय महिला के संघर्षों और उसकी आत्म–खोज की कहानी का प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है। इस उपन्यास में लेखिका ने भारतीय महिलाओं के जीवन और उनके सामने आने वाली चुनौतियों को बड़ी बारीकी से उजागर किया है।

निश्कर्श, कहानी का केंद्रीय/मुख्य पात्र अंकिता है, जो विज्ञापन जगत में काम करती है। वह आधुनिकता की दौड़ में स्वतंत्र रूप से अपने सपनों को पूरा करना चाहती है, लेकिन वह समाज के रूढ़िवादी मूल्यों और पारिवारिक दबावों के बीच खुद को फंसा हुआ पाती है। वह अपनी पहचान की खोज में लगातार संघर्ष करती है और समाज में अपनी जगह बनाने के लिए लगातार प्रयास भी करती है। यह उपन्यास समाजिक यथार्थवाद के साथ–साथ, महिला सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से समाज को परिचित करवाने का प्रयास करता है। इस उपन्यास का पहला संस्करण वर्ष 1990 में प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया था। 'आवां' चित्रा मुद्गल के उन लोकप्रिय उपन्यासों में से एक हैं, जिसे हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर के रूप में माना जाता है। इस उपन्यास में लेखिका ने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संघर्षों का एक गहन और सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। 'आवां' के माध्यम से लेखिका ने समाजिक यथार्थवाद, स्त्री विमर्श, श्रमिक आंदोलन आदि का अद्भुत ढंग से चित्रण किया है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'आवां' को भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि इस उपन्यास में न केवल महिलाओं के मुद्दों को स्थान मिला बल्कि इसने समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है। इस उपन्यास की भाषा जितनी सरल और सहज है, उतनी ही यह बहुत ही प्रभावशाली भी है। 'गिलिगडु' चित्रा मुद्गल के उन लोकप्रिय उपन्यासों में से एक हैं, जिसने मानवीय संबंधों की गहराई, उनके भीतर के संघर्षों और सामाजिक

मुद्दों का बखूबी चित्रण किया है। यह उपन्यास सही मायनों में रिश्तों की जटिलताओं और मानव जीवन के अनकहे पहलुओं को उजागर करता है। चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'गिलिगडु' में आप रिश्तों की जटिलताओं, सांस्कृतिक टकराव और महिला सशक्तिकरण के पहलुओं को एक नए दृष्टिकोण से देखने में सक्षम हो पाते हैं। इस उपन्यास का शीर्षक 'गिलिगडु' है जो आदिवासी भाषा का एक शब्द है, जिसका अर्थ होता है, रिश्तों की वह गांठ जो भावनात्मक और मानसिक स्तर पर लोगों को जोड़ती है, लेकिन साथ ही उन्हें बांधती भी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 मुदगल, चित्रा (1998) ,*तहखानों में बंद आइनों के अक्स,* : पुणे अभिनव प्रका0
2 मुदगल, चित्रा (1999) , *आवा,* : नई दिल्ली अनन्य प्रका0
3 मुदगल, चित्रा (1980) , *जहर ठहरा हुआ,* : नई दिल्ली अनन्य प्रका0
4 मुदगल, चित्रा (1982) *लाक्षागृह* , : नई दिल्ली मालवीय नगर पराग प्रका0
5 मुदगल, चित्रा (1982) *अपनी वापसी* : हापुड सभांवना प्रका0
6 मुदगल, चित्रा (1986) *इस हमाम में,* , : नई दिल्ली प्रभात प्रका0,
7 मुदगल, चित्रा (1986) : ग्यारह लम्बी कहानिया, : नई दिल्ली प्रभात प्रका0